१.१.४ संस्कृत एवं सम्बद्धशास्त्रों से संबंधित सभी पाठ्यपुस्तके संस्कृत माध्यम में उपलब्ध हैं। संस्कृत में तैयार किये गये स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का विवरण दिया जाय। संस्कृत संस्करण में उपलब्ध पाठ्यक्रमों की कुल संख्या।

विश्वविद्यालय सभी की बोधगम्यता के लिए सरल मानक संस्कृत में शास्त्रीय विषय और आधुनिक ज्ञान विज्ञान के पाठ्यक्रम प्रदान करता है। यह सस्था शास्त्रीय ज्ञानपरम्परा एवं आधुनिक ज्ञानविज्ञान की संवाहिका है। वर्तमान में जिनमें पूर्णतः संस्कृत के कार्यक्रमों की संख्या १०१ तथा पाठ्यक्रमों की संख्या ६०२ है। ०५ संकायों के अन्तर्गत २२ विभागों में १३०५ पाठ्यक्रम और १७७ कार्यक्रम संचालित हैं। है । शेष कार्यक्रमों के पाठ्यक्रमों में भी अंशतः संस्कृत की अनिवार्यता है । बहु-विषयक और अंतर्विषयक कार्यक्रमों में शास्त्री, आचार्य, शिक्षाशास्त्री, विद्यावारिधि, विद्यावाचस्पति, डिप्लोमा, प्रमाण पत्र और सेतु कार्यक्रम भी समाहित हैं। इनका सम्पूर्ण पाठ्य विवरण तथा समस्त ग्रन्थ संस्कृत भाषा के माध्यम से उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग द्वारा निरन्तर शास्त्रीय ग्रन्थों का मुद्रण एवं प्रकाशन सरल मानक संस्कृत में किया जा रहा है। अद्यावधि ६०० से अधिक ग्रन्थ विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्क्रम से सन्दर्भित ग्रन्थ प्रकाशित किए गए हैं । अनिवार्यतया परीक्षा संस्कृत भाषा में आयोजित की जाती है।

- शास्त्री पाठ्यक्रम- यह ०६सत्रार्द्ध से युक्त तीन वर्षों का स्नातक पाठ्यक्रम है। यह पाठ्यक्रम ३३ विषयों में संचालित होता है। निम्नलिखित में अनिवार्य शास्त्रीय विषय के अन्तर्गत किसी एक विषय को लेना छात्र के लिए अनिवार्य है।

  ऋग्वेद, शुक्ल यजुर्वेद (माध्यन्दिनशाखीय), कृष्ण-यजुर्वेद तैत्तिरीयय शाखा , सामवेद , अथर्ववेद (शौनक शाखा) , वेदनैरुक्तप्रक्रिया , प्राचीनव्याकरण , नव्यव्याकरण , साहित्य , प्राचीनन्याय , नव्यन्याय , सांख्य योग , पूर्वमीमांसा, वेदांत , दर्शन , जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन , तुलनात्मक दर्शन , थेरवाद (स्थविरवाद), आगम, योग, धर्मशास्त्र, पौरोहित्य, पुराण इतिहास, गणित, सिद्धांतज्योतिष फलितज्योतिष प्राकृत और जैनागम, प्राचीन राजशास्त्र और अर्थशास्त्र, भारतीय विद्या संस्कृति, शक्ति-विशिष्ट अद्वैत वेदांत, भाषाविज्ञान, तुलनात्मक धर्म। इन पाठ्यक्रमों में प्रति सत्रार्द्ध में कवर्गीय मुख्य विषय संस्कृत माध्यम में ही पढ़ाया जाता है। प्रत्येक सत्रार्द्ध में आठ पत्र होते हैं वैकल्पिक और अतिरिक्त विषयों के लिए एक पत्र निर्धारित है। प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए कुल १००अंक जिसमें २५ अंकों का आंतरिक मूल्यांकन और ७५ अंकों की वार्षिक परीक्षा होती है, उत्तीर्ण होने के लिए कुल ३६ अंक आवश्यक हैं। विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग द्वारा संस्कृत के सभी शास्त्रीय पाठ्यक्रमों का विवरण प्रकाशित किया गया है।

- आचार्य पाठ्यक्रम- आचार्य पाठ्यक्रम दो वर्षों का है और इसमें चार सत्रार्द्ध होते हैं। विश्वविद्यालय में ४१ विषयों में संस्कृत में परीक्षा आयोजित की जाती है। प्रति सत्र चार पत्र हैं। इन सभी में संस्कृत भाषा अनिवार्य है।
- शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम यह पाठ्यक्रम दो वर्षों का है तथा एक पत्र संस्कृत भाषा का अनिवार्य है । परीक्षा हेतु विकल्पतया संस्कृत भाषा उपलब्ध है ।

- कौशल पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय में दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र के द्वारा वास्तु, कर्मकाण्ड, आन्तरिक सज्जा विषयों में सरल मानकसंस्कृत के माध्यम से **B.VOC** एवं **M.VOC** उपाधि प्रदन की जाती है ।
- विद्यावारिधि-विद्यावाचस्पति पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अपने सभी विभागों में कार्यक्रम के अन्तर्गतसरल मानक संस्कृत के माध्यम से पारम्परिक विषयों में अनुसंधान की उपाधि प्रदान करता है । शोधप्रबन्ध प्रस्तुति एवं शोधप्रविधिपाठ्यक्रम परीक्षा संस्कृत माध्यम से अनिवार्य है। प्रगति विवरणिका भी संस्कृत में प्रस्तुत की जानी अनिवार्य है ।
- **B.Lib, M.Lib, B.Voc, M.Voc, B.ed** जैसे समसामयिक कार्यक्रम में भी एक पत्र संस्कृत का अनिवार्यतया समाविष्ट है ।
- ऑनलाईन संस्कृत पाठ्यक्रम सरल मानक संस्कृत की दृष्टि से संस्कृतभाषाशिक्षण, कर्मकांड, वास्तु, ज्योतिष एवं कुण्डली विज्ञान, व्याकरण, योग, दर्शन,अर्चक वेदांत सहित दस विषयों में त्रैमासिक, षाण्मासिक और वार्षिक पाठ्यक्रम ऑनलाइन संचालित किये जाते हैं। कुल १० विषयों में ३० कार्यक्रम चल रहे हैं जिससे ८०० छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों में सर्वत्र सरल मानक संस्कृत का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम के दृष्टिगत छात्रों में संस्कृत दक्षता हेतु शास्त्रचर्चा, सम्भाषण,वाग्वर्द्धिनी सभा, शास्त्रार्थ सभा, मन्त्राभ्यास, सूत्रपाठ, एकल भाषण, छंद गायन, सूत्र-पाठ, समस्या सम्पूर्ति आदि कार्यक्रम सरल मानक संस्कृत में आयोजित किए जाते हैं।

विश्वविद्यालय ने पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों का प्रकाशन सरल संस्कृत मानक के अनुसार किया है। इस क्रम में सिद्धान्ततत्त्वविवेक, समासवृत्तिविमर्श, सिद्धान्तशिरोमणि, पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा, श्रीकृष्णस्तव, श्लोकसिद्धानतकौमुदी, व्याकरणदर्शनप्रतिमा, वैयाकरणसिद्धान्तमंजूषा, व्याकरणदर्शपीठिका, यज्ञतत्वविमर्श, कुण्डरत्नावली, वैदिकशिक्षास्वरूपविमर्श, मैत्र्युपनिषद् सामान्यनिरुक्ति, वास्तुसंग्रह, बृहत्संहिता, अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम्, सरलत्रिकोणमिति, लघुपाराशरी, सूर्यसिद्धांत, कामन्दकीयनीतिसार, कौटिलीय अर्थशास्त्र, अश्वमेधमहायज्ञ, संग्रहशिरोमणि सूर्यग्रहणम् सामान्य निरुक्तिविवेचन, रसमंजरी आदि सरल मानक संस्कृत के ग्रन्थ विश्वविद्यालय के प्रकाशनविभाग द्वारा शासन के वित्तीय सहयोग से निरन्तर प्रकाशित किया जा रहा हैं।

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में संस्कृत भाषा के माध्यम से शास्त्रों के अवबोधन हेतु संस्कृत भाषा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। संस्कृत पाठ्यक्रम के व्यापक अवगाहन के लिए पाठ्यक्रम में निहित सूक्तों और सूक्तियों को ध्वनि के माध्यम से परिसर में गुंजायमान किया गया है और छात्रों के लिए श्रवण और प्रतिबिंबन की व्यवस्था की गई है। पाठ्यक्रम के विषयों की आसान और सरल समझ के लिए इंटरनेट के माध्यम से संस्कृत में शास्त्र परिपक्वता, ज्ञान चर्चा, शास्त्रप्रौढिआदि परियोजनाएं आयोजित की जाती हैं। विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर संस्कृत भाषा में पाठ्यक्रम प्रकाशित एवं मुद्रित किये जाते हैं। वर्तमान समय में संशोधित संस्करण इसका प्रकाशन विभाग द्वारा किया गया है। सभी प्रकाशित पाठ्यक्रम विवरण एवं प्रकाशित ग्रन्थों की प्रकाशन सूची निदर्शिका के रूप में विश्वविद्यालय के आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

1.1.4Q$_I$Mसर्वाणि संस्कृतसम्बद्धानि शास्त्रसम्बद्धानि च पाठ्यविवरणानि संस्कृतमाध्यमेन उपलभ्यन्ते।

संस्कृते निर्मितानां स्नातक-स्नातकोत्तरपाठ्यविवरणानां विवरणं देयम्। पाठ्यक्रमाणां सम्पूर्णा सङ्ख्या, पाठ्यक्रमानुसारेण, संस्कृतरूपान्तरेण समुपलभ्यमानाः पाठ्यक्रमाः।

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य द्वाविंशतिविभागेषु शास्त्रसम्बद्धविषयाः संस्कृतभाषामाध्यमेन पाठ्यन्ते। विश्वविद्यालयः सर्वेषां कृते सौकर्येण सरलमानकसंस्कृतेन शास्त्रीयविषयान् आधुनिकज्ञानविज्ञानविषयान् च प्रसारयति।

- पाठ्यक्रमनिर्माणे विविधस्तरेन समीक्षणं विधाय २२ विभागेषु ०५ संकायेषु १३०५ पाठ्यक्रमाः १७७ कार्यक्रमाः संचालिताः सन्ति। पाठ्यक्रमेषु च बहुविषयकाः अन्तर्विषयकाश्च पाठ्यक्रमाः कार्यक्रमाः शास्त्रि-आचार्य-विद्यावारिधि विद्यावाचस्पति-डिप्लोमा-प्रमाणपत्र-सेतुकार्यक्रमाः निबद्धाः सन्ति।
- एतेषां पाठ्यविवराणि संस्कृतभाषयाम् उपलब्धानि सन्ति । परीक्षाऽपिसंस्कृतभाषया सञ्जायते। संस्कृतभाषायां निर्मितास्सन्ति। प्रचाल्यमानेषु पाठ्यक्रमेषु सर्वे संस्कृतसम्बद्धाः शास्त्रसम्बद्धाः पाठ्यक्रमाः सस्कृतमाध्यमेन प्रकाशिताश्च सन्ति।
- शास्त्रिपाठ्यक्रमः- अयं च स्नातकस्तरीयः त्रिवर्षीयः पाठ्यक्रमः अत्र षट् सत्रार्द्धानि सन्ति। त्रयास्त्रिंशत् विषयेषु शास्त्रिपाठ्यक्रमः संचाल्यते प्रतिसत्रे कवर्गीयो मुख्यः विषयः संस्कृतमाध्यमेनैव पाठ्यते।

निम्नलिखितेषु कवर्गान्तर्गतैकस्य विषयस्य ग्रहणमनिवार्यम्।

१. ऋग्वेदः, २. शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः),३. कृष्ण-यजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः), ४. सामवेदः, ५. अथर्ववेदः(शौनकशाखीयः), ६. वेदनैरुक्तप्रक्रिया, ७. प्राचीनव्याकरणम्,८. नव्यव्याकरणम्,
९. साहित्यम्, १०. प्राचीनन्यायवैशेषिकम्, ११. नव्यन्यायः, १२. सांख्ययोगम्, १३. पूर्वमीमांसा,
१४. वेदान्तः, १५. दर्शनम्, १६. जैनदर्शनम्, १७. बौद्धदर्शनम्, १८. तुलनात्मकदर्शनम्, १९. थेरवादः (स्थविरवादः), २०. आगमः, २१. योगतन्त्रम्, २२. धर्मशास्त्रम्, २३. पौरोहित्यम्, **२४. पुराणेतिहासः, २५. गणितम्, २६. सिद्धान्तज्यौतिषम्,** २७. फलितज्यौतिषम्, २८. प्राकृतम् एवं जैनागमः, २९. प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्रम्, ३०. भारतीयविद्यासंस्कृतिः, ३१. शक्तिविशिष्टाद्वैतवेदान्तः, ३२. भाषाविज्ञानम्, ३३. तुलनात्मकधर्मः।

- प्रतिसत्रार्द्धे कवर्गीयो मुख्यः विषयः संस्कृतमाध्यमेनैव पाठ्यते। प्रतिखण्डे अष्टपत्राणि, ऐच्छिकेषु अतिरिक्तविषयेषु च प्रतिखण्डमेकं पत्रं निर्धारितं विद्यते । प्रत्येकं प्रश्नपत्रस्य पूर्णांकः- १०० तत्र २५ अंकानामान्तरिकमूल्यांकानं ७५ अंकानां च वार्षिकी परीक्षा भवति, आहत्य ३६ अंकानां उत्तीर्णतायै अनिवार्या । सर्वत्र च संस्कृतं अनिवार्यं विद्यते। आधुनिकच्छात्राणां कृते च सेतुपाठ्यक्रमाः प्रमाणपत्रीयपाठ्यक्रमाश्च अभिनिविष्टाः सन्ति। सर्वेषां शास्त्रिपाठ्यक्रमाणां संस्कृतभाषायां विवरणं विश्वविद्यालयस्य प्रकाशनविभागतः प्रकाशितमस्ति। यथासमयं विद्यापरिषदा यथोपक्षितं संशोधनमत्र विधीयते।
- आचार्यपाठ्यक्रमः- आचार्यपाठ्यक्रमः तु वर्षद्वयात्मकः वर्तते, तत्र चत्वारि सत्रार्द्धानि सन्ति। विश्वविद्यालये ३९ विषयेषु इयं परीक्षा संस्कृतेन भवति। प्रतिसत्रार्द्धे चत्वारि पत्राणि सन्ति। तत्र सर्वेषु संस्कृतभाषायाः अनिवार्यता विद्यते।
- शिक्षाशास्त्रिपाठ्यक्रमः- अयं पाठ्यक्रमः द्विवर्षीयः प्रश्नोत्तरलेखने च हिन्दीसंस्कृतयोरेकतरस्य विकल्पः दत्तः वर्तते। तत्र च एकं संस्कृतशिक्षणमिति शीर्षकोपेतं पत्रमनिवार्यतया विद्यते।
- कौशलपाठ्यक्रमाः- विश्वविद्यालये दीनदयालउपाध्यायकौशलकेन्द्रपक्षतः ज्योतिषवास्तुकर्मकाण्डआन्तरिकसज्जा विषयकाः प्रमाणपत्रीय-डिप्लोमा स्नातकपाठ्यक्रमः (B.VOC,

M.VOC) नाम्ना पाठ्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते। तत्रापि सरलमानकासंस्कृतेन अध्ययनाध्यापनं विधीयते। तत्र च समाजस्य सामान्यजनाः लाभान्विताः भवन्ति।

शोधपाठ्यक्रमाः- विश्वविद्यालयस्य सर्वेषुविभागेषु विद्यावारिधि (PHD) कार्यक्रमान्तर्गते आधुनिकं विषयंसंकलय्य शास्त्रेषु अनुसंधानकार्यं विश्वविद्यालयेनसम्पाद्यते।

आधुनिकविषयमतिरिच्य विद्यावारिधेः शोधप्रबन्धाः संस्कृतभाषामाध्यमेन प्रस्तूयन्ते। विद्यावरिधेः छात्राणां कृतकार्यस्य प्रगतिविवरणम् गृहीतशोधविषयानुगुणं संस्कृतमाध्यमेण चोपस्थाप्यते। इयमेवस्थितिः विद्यावाचस्पतिपाठ्यक्रमेपि विद्यते ।

शोधपाठ्यक्रमे शोधषाण्मासिकप्रशिक्षणपाठ्यक्रमे मुख्यत्वेनप्रशिक्षकाः संस्कृतमाध्यमेन शोधछात्रान् प्रशिक्षयन्ति। तथा च तेषां परीक्षायाः प्रश्नपत्राण्यपि संस्कृतभाषायां भवन्ति। शोधपाठ्यक्रमे च त्रैमासिकं यद्प्रगतिविवरणं समर्प्यते तदपि संस्कृतभाषायामेव विधीयते।

- ऑनलाइन पाठ्यक्रमाः- विश्वविद्यालयद्वारा दशसु विषयेषु ऑनलाइनमाध्यमेन त्रैमासिकः, षाण्मासिकाः वार्षिकाश्च पाठ्यक्रमाः सरलमानकसंस्कृतशिक्षणम् कर्मकाण्डम् वास्तु ज्योतिषम् योगः दर्शनम् वेदान्त प्रभृतयः दशविषयाः स्वीकृताः सन्ति यत्र ३० कार्यक्रमाः प्रचलिताः वर्तन्ते येन ८०० छात्राः लाभन्विताः सन्ति। अत्रापि सरलमानकसंस्कृत्सयैव प्रयोगः क्रियते ।
- विश्वविद्यालये अन्येऽपि बहवः पाठ्यक्रमाः संचाल्यन्ते यत्र संस्कृतस्य अनिवार्यता अस्ति। तत्र ग्रन्थालयसूचनाविज्ञानम् संगीतादिविषयाणां पाठ्यक्रमः कल्पितो विद्यते। विश्वविद्यालये सरलमानकसंस्कृतसम्बद्धाः अनेके खलु कार्यक्रमाः क्रियन्ते। तेषां सर्वेषां कार्यक्रमाणां उपयोगित्वं शास्त्रपठनपाठने दरीदृश्यन्ते। यथा वाक्सभा, शास्त्रार्थसभा, वाग्वर्द्धिनीसभा, एकलभाषणम्, श्लोकान्त्याक्षरी , सूत्रान्त्याक्षरी, समस्यापपूर्तिप्रभृतयः सरलमानकसंस्कृतेन आयोज्यन्ते।

एते शैक्षणिकगतिविधयः संस्कृतभाषामाध्यमेन सम्पाद्यन्ते। शास्त्राधिगमाय संस्कृतभाषायां प्रवीणतायै संस्कृतविश्वविद्यालयस्य विभिन्नेषु विभागेषु संस्कृतभाषाप्रशिक्षणक्रमाः संस्कृतभाषामाध्यमेन संचाल्यन्ते। संस्कृतपाठ्यक्रमाणां सर्वतोभवेन अवगमनाय पाठ्यक्रमे उपनिबद्धानां सूक्तानां सूक्तीनाञ्च परिसरे प्रकाशनं ध्वनिमाध्यमेन छात्राणां कृते श्रवणमननव्यवस्था च कृता विद्यते। पाठ्यक्रमविषयाणां सहजतया सरलतयाावबोधनाय च अन्तर्जालमाध्यमेन संस्कृतभाषायां विविधाः प्रकल्पाः शास्त्रप्रौढि-ज्ञानचर्चा-ज्ञानवैभवसमुल्लासप्रभृतयः संस्कृतभाषामाध्यमेन समायोजिताः वर्तन्ते। पाठ्यक्रमाणां प्रकाशनं मुद्रणं च विश्वविद्यालयतः यथावसरं क्रियते। इदानीन्तने समये संशोधितसंस्करणं प्रकाशनविभागतः प्रकाशितं भवति। सर्वमपि प्रकाशितं पाठ्यविवरणं निदर्शिकारूपेण विश्वविद्यालयस्य अन्तर्जाले समुपलब्धमस्ति ।